International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 16-12-2020, Accepted: 06-01-2021, Published: 31-01-2021
Volume 7, Issue 1, 2021, Page No. 86-88

गोस्वामी तुलसीदासः व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व'

अन्नू शर्मा[1], नवनीता भाटिया[2]
शोध–छात्रा, हिंदी विभाग, ओ. पी. जे. एस. विश्वविद्यालय, चुरु, राजस्थान, भारत
सह–आचार्या, हिंदी विभाग, ओ. पी. जे. एस. विश्वविद्यालय, चुरु, राजस्थान, भारत

सारांश
हिन्दी साहित्य के सम्पूर्ण इतिहास में सर्वाधिक विवादास्पद और लोकप्रिय रचनाकार यदि 'तुलसीदास' को कहा जाए तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। तुलसीदास जी का जीवन और साहित्य, तत्कालीन विद्वजनों से आधुनिक बौद्धिक रचनाकारों तक की आलोचना के केन्द्र में रहा है। हिन्दी के लगभग हर बड़े रचनाकार और आलोचक ने 'तुलसी' पर चर्चा की है। जहाँ एक ओर रामचन्द्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामविलास शर्मा, निराला व विश्वनाथ त्रिपाठी जैसे विचारकों ने तुलसीदास जी को हिन्दी का अद्वितीय कवि माना है तो वहीं राजेन्द्र यादव, मुक्तिबोध, रांगेय राघव जैसे विचारकों द्वारा तुलसीदास का विरोध भी हुआ है। खंडन–मंडन करने की इस पूरी प्रक्रिया में 'गोस्वामी तुलसीदास' पर निरन्तर मंथन हुए किन्तु उनकी लोकप्रियता तनिक भी बाधित नहीं हुई।
गोस्वामी तुलसीदास जी की लोकप्रियता देश व काल की सीमाओं से परे है। मॉरीशस, फिजि, अफ्रीका, इण्डोनेशिया, बर्मा जहाँ–जहाँ भारतीयों की कर्मभूमि बनीं, वहीं तुलसी की रामकथा भी रच–बस गई। तुलसीदास जी का साहित्य शास्त्र सम्मत होने के साथ ही लोक सम्मत भी है। इसी कारण विद्वान से विद्वान व्यक्ति को तुलसी के साहित्य में ज्ञान का अतुल्य भण्डार मिल जाता है और वहीं अनपढ़ और सामान्य ज्ञान–बोध वाली जनता को भी तृप्त करने में तुलसी का साहित्य सक्षम है।

मूल शब्दः व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व, गोस्वामी तुलसीदास, हिन्दी साहित्य

प्रस्तावना
हिन्दी साहित्य के सम्पूर्ण इतिहास में सर्वाधिक विवादास्पद और लोकप्रिय रचनाकार यदि 'तुलसीदास' को कहा जाए तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। तुलसीदास जी का जीवन और साहित्य, तत्कालीन विद्वजनों से आधुनिक बौद्धिक रचनाकारों तक की आलोचना के केन्द्र में रहा है। हैं। 'राम–सीता विवाह' प्रसंग में सीता विवाहोपरांत श्रीराम को कनखियों से सामान्य नवविवाहिता की भांति देख रही हैं–

"दूलह श्रीरघुनाथ बने दुलही सिय सुंदर मंदिर माहीं।
गावति गीत सबै मिलि सुंदरि वेद जुवा जुरि विप्र पढ़ाहीं।।
रामको रूप निहारति जानकी कंकनके नगकी परछाहीं।
यातें सबै सुधि भूलि गई कर टेकि रही पल हारत नाहीं।।"

तुलसीदास जी के साहित्य–सृजन का ही प्रभाव है कि आज भी हिन्दी क्षेत्र में विवाह–उत्सव में मंगल की कामना के लिए श्रीराम–सीता विवाह के गीतों को ही गाया जाता है। पाश्चात्य विद्वान व हिन्दी साहित्य के इतिहास को व्यवस्थित करने के लिए विख्यात 'जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने भी तुलसी के महत्त्व को स्वीकार करते हुए उनके द्वारा रचित ग्रन्थ 'रामचरितमानस' की लोकप्रियता के विषय में कहा है कि– "तीन सौ से भी अधिक वर्षों से यह कृति हिन्दू जनता के जीवन, चरित्र और वाणी में अनुस्भूत रही है और मात्र काव्य– सौन्दर्य के लिए सर्वप्रिय और प्रशंसित ही नहीं अपितु शास्त्रों के समान समादृत भी रही है। यह दस करोड़ जनता की बाइबिल है और इसे उसी प्रकार दैवी ग्रंथ मानते हैं जैसे अंग्रेज पादरी बाइबिल को।" यह निर्द्वन्द्व सत्य है कि भारतीय जन–जीवन (हिन्दी पट्टी का क्षेत्र के संबंध में) पर जितना गहरा और व्यापक प्रभाव गोस्वामी जी का है, उतना किसी अन्य भक्त या कवि का नहीं है। किन्तु यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि हिन्दी काव्याकाश को अपने प्रकाश से आलोकित करने वाले इस सूर्य के जीवन सम्बन्धी घटनाओं, तिथियों तथा रचनाओं की प्रमाणिकता प्रायः संदिग्ध है। जो कुछ भी उनके स्वयं के साहित्य तथा समवर्ती व परवर्ती रचनाकारों की रचनाओं के आधार पर ज्ञात है, उस आधार पर आपके जीवन, व्यक्तित्त्व व कृतित्त्व आदि के विषय में निम्नांकित सूचनाएं मिलती हैं–

जन्म तिथि एवं जन्म स्थान
भारतीय महापुरूषों का जीवन–चरित्र सदैव ही अनिश्चित रहा है। उसका कारण यह भी रहा है कि भारतीय महापुरूषों में अपने लौकिक जीवन के इतिहास को प्रकट करने की परम्परा शालीनता व मर्यादा के विपरीत मानी जाती रही है। 'तुलसीदास' भी महापुरूषों व सन्तों की इसी परम्परा से सम्बन्धित हैं, अतः उनके जन्म, परिवार, विवाह, मृत्यु आदि के विषय में भी अनिश्चितता बनी हुई है।
वेणीमाधवदास कृत 'गोसाईचरित' के अनुसार तुलसी की जन्म तिथि संवत् 1554 है। श्रावण शुक्ल सप्तमी को, जब बृहस्पति और चन्द्रमा कर्क में थे, मंगल तुला के थे और शनि वृश्चिक के थे,तब तुलसी ने शरीर धारण किया अर्थात् तुलसी का जन्म हुआ–

"तिनके घर द्वादस मास परे। जब कर्क के जीव हिमांसु चरे।।
कुज सप्तह अठम भानु तनै। अभिहित सुठि सुन्दर साँझ समै।।
पन्द्रह सो चौवन बिषै कालिंदी के तीर।
सावन शुक्ला सप्तमी तुलसी घरेड सरीर।"

'राम मुक्तावली' नामक एक कृति के आधार पर जगमोहन वर्मा ने तुलसी की जन्मतिथि सं. 1560 सिद्ध की है। किन्तु इस प्रकार गोस्वामी जी की कुल आयु 120 वर्ष हो जाती है, जिसे वैज्ञानिक आधार पर उचित नहीं माना जा सकता है। डॉ. माताप्रसाद गुप्त तथा डॉ. उदयभानु सिंह इसे अप्रमाणिक रचना मानते हैं, जिसे सम्भवतः तुलसीदास के बहुत समय बाद किसी रचनाकार ने लिखा होगा।

'शिवसिंह सरोज' के अनुसार "यह महाराज सं. 1583 के लगभग उत्पन्न हुए थे।" किन्तु शिवसिंह सेंगर ने यह जन्मतिथि जनश्रुतियों के आधार पर स्वीकार की है। अतः इसकी प्रमाणिकता भी संदिग्ध है। 'विल्सन गासाँ द तासी' ने तुलसी की जन्मतिथि सं. 1600 मानी है।

उपर्युक्त सारे मतों के आधार पर तुलसीदास जी की जन्मतिथि को लेकर विवाद होते रहे हैं, किन्तु अधिकांश विद्वान उनकी जन्मतिथि संवत् 1554 श्रावण शुक्ल सप्तमी को ही स्वीकार करते हैं।

शैशवावस्था व बाल्यावस्था

तुलसीदास का जन्म अभुक्त मूल नक्षत्र में हुआ था जिसके कारण उन्हें परिवार के लिए अमंगलकारी समझा गया और उनके प्रति उपेक्षा का व्यवहार किया गया। पांच वर्ष की आयु तक पहुँचते–पहुँचते तुलसीदास के सिर से माता–पिता की छाया उठ गई। 'कवितावली' में अपने बाल्यकाल के दुःख व पीड़ा का उल्लेख करते हुए वे स्वयं लिखते हैं कि–

"मातु पिता जग जाइ तज्यो बिधिहू न लिखी कछु भाल भलाई।
नीच निरादर–भाजन, कादर, कूकर टूकन लागी ललाई।
राम–सुभाउ सुन्यो तुलसी, प्रभु सो कह्य वारक पेट खलाई।
स्वारथ को परमारथ को रघुनाथ सो साहब खोरि न लाई।।"

बालक तुलसी को पेट भरने के लिए द्वार–द्वार भटकना पड़ता था। उन्हें लोगों ने दुतकारा और भला–बुरा कहा। इसीलिए तुलसी 'विनयपत्रिका' में लिखते हैं कि–

"कहा न कियो, कहाँ न गयो, सीस काहि न नायो।
हाहा करि दीनता कही द्वारा–द्वारा, बार–बार, परी न छार मुंह बायो।
असन–बसन बिनु बावरी, जहँ–जहँ उठि धायो।"

तुलसीदास की रचनाओं में उनके माता–पिता का नामोल्लेख नहीं है किन्तु उनका जन्म एक अच्छे कुल में हुआ था, इसके संकेत मिलते हैं। तुलसीदास 'विनयपत्रिका' में अपने वंश के सम्बन्ध में लिखते हैं कि–

"दियो सुकुल जनम, सरीर सुन्दर, हेतु जो फल चारि को।
जो पाइ पंडित परम पद पावत पुरारि मुरारि को।।"

यहाँ सुकुल से तात्पर्य 'अच्छे कुल' से ही है। इसी आधार पर तुलसी का जन्म 'शुक्ल ब्राह्मण कुल' में माना जाता है। जनश्रुतियों एवं बहिस्साक्ष्य के आधार पर तुलसीदास जी की माता का नाम 'हुलसी' प्राप्त होता है। तुलसीदास के बचपन का नाम 'रामबोला' था। विनयपत्रिका में उन्होंने स्पष्टतः कहा है कि–

"राम को गुलाम नाम रामबोला राख्यो राम।
काम यहै नाम द्वै हौं कबहूँ कहत हौं।।"

'राम' नाम अधिक लेने के कारण ही तुलसी का नाम 'रामबोला' रखा गया। जनश्रुतियों और अनेक जीवनियों में यह कथा मिलती है कि जन्म के साथ इन्होंने पहला शब्द 'राम' उच्चारित किया था। इसी कारण इनका नाम 'रामबोला' रखा गया।

गुरु एवं शिक्षा

अपनी बाल्यावस्था की विपन्नता में ही भटकते हुए तुलसीदास रामनन्दी शिष्य परमपरा के 'गोपालदास' के शिष्य 'नर हरिदास' के शिष्य बने। इन्हीं नरहरिदास ने उन्हें रामबोला के स्थान पर तुलसी नाम दिया और इन्हीं के सानिध्य में तुलसी की रामभक्ति दृढ़ भी हुई।

'रामचरितमानस' के आरम्भ के एक श्लोक में तुलसीदास लिखते हैं कि–

"नानापुराणनिगमागम सम्मत यद्,
रामायणै निगदित कचिदन्यतोपि,
स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा
भाषानिबन्धमतिमन्जुलमातनेति।"

इस आधार पर यह स्पष्ट होता है कि तुलसीदास जी ने वेद–शास्त्र, पुराण, काव्य, नाटक तथा संस्कृत साहित्य व दर्शन की सभी विधाओं का अध्ययन किया था।

विवाह

मुरलीधर चतुर्वेदी ने 'रत्नावली लघु दोहा संग्रह' के आधार पर तुलसीदास का विवाह एक रूप गुण से समृद्ध विदुषी ब्राह्मण कन्या 'रत्नावली' से माना है। रत्नावली से आसक्ति के अतिरेक के कारण रत्नावली ने ही तुलसीदास के प्रेम को उनकी दुर्बलता के रूप में ग्रहण करते हुए आक्रोशपूर्ण शब्दों में फटकारते हुए कहा कि–

'लाज न आवत आपको, दौर आयहु साथ,
धिक्–धिक् ऐसे प्रेम को कहा कहौं मैं नाथ
अस्थि चर्ममय देह मम्, ता मैं ऐसी प्रीति
तैसी जौ श्री राम महुं, होति न तौ भवभीति।'

तुलसीदास का संवेदनशील मन रत्नावली के शब्दों के मर्म को समझ गया फलस्वरूप तुलसी ने गृह–त्याग दिया और काशी को अपना निवास–स्थान बना लिया। यहीं काशी को केन्द्र बनाकर ही तुलसी काव्य–सृजन के कार्य में लग गए।

वृद्धावस्था व अन्तकाल

तुलसीदास के साहित्य–सृजन के आधार पर यह दृष्टिगत होता है कि तुलसी को अपने अंतिम समय में अनेक शारीरिक कष्ट थे, जिसका वर्णन उन्होंने 'दोहावली', 'कवितावली' एवं 'विनय पत्रिका' में किया है। तुलसीदास जी ने 'विनयपत्रिका' में वृद्धावस्था का अत्यन्त मार्मिक चित्रण किया है। तुलसी ने अपनी वृद्धावस्था के कष्टों और शारीरिक यातनाओं को बहुत अच्छी तरह देखा और भोगा है। 'विनयपत्रिका' में वे लिखते हैं कि–

'अब सोचत मुनि बिनु भुजंग जयों, विकल अंग कल दले जरा धाय।
सिर धुनि–धुनि पछितात मीजिकर कोइ न मीत हित दुसह धाय।।'

तुलसी के जन्म के समान ही उनकी मृत्यु भी विवादास्पद रही है। विद्वानों में उनकी मृत्यु के कारण को लेकर परस्पर मतभेद है। कुछ के अनुसार उनकी मृत्यु प्लेग के कारण हुई थी तथा कुछ विद्वान उनकी मृत्यु को स्वाभाविक मानते हैं। जनश्रुति के आधार पर उनकी मृत्यु सं. 1680 की श्रावण सप्तमी में काशी के अस्सी घाट पर मानी जाती हैं–

'संवत सौलह सै असी, असी गंग के तीर।
श्रावण शुक्ल सप्तमी, तुलसी तज्यौ शरीर।'

गोस्वामी जी की कृतियों से उनके व्यक्तित्व का जो स्वरूप सामने उभरता है इसके आधार पर कहा जा सकता है कि गोस्वामी जी

अत्यन्त निस्प्रह और निर्भिक स्वभाव के रामभक्त थे। वें अपने जीवन की सार्थक उपलब्धि का श्रेय राम के अनुग्रह को ही देते हैं– तुलसीदास ऐसे काव्य की अनुशंशा करते हैं जो सबके लिए कल्याणकारी हो। इसलिए नैतिक मूल्यों में उनकी कड़ी आस्था है। डॉ. नगेन्द्र के अनुसार "उनकी भक्ति में आलम्बन मर्यादा पुरूषोतम राम है जो जीवन के सर्वोच्च नैतिक मूल्यों के प्रतीक है जो यह मानकर चलते हैं कि रूढ़ियों से मुक्त नैतिक मूल्य अपने मौलिक रूप में चिर शाश्वत है।" गोस्वामी जी रूढ़ियों, अन्ध विश्वासों, अमानवीय प्रवृत्तियों, शोषक नीतियों, पाखण्डी प्रथाओं, विकृत परम्पराओं के घोर विरोधी थे। तुलसी के अन्दर लोककल्याण की भावना थी। वे समाज में व्याप्त हर प्रकार की विषमता, दरिद्रता, अकाल, भुखमरी को समाप्त करना चाहते थे, जिसके लिए उन्होंने 'रामराज्य' का स्वप्न देखा। उनकी कविता का आधार भी इसी कारण यही 'रामराज्य' है। 'विश्वनाथ त्रिपाठी' लिखते हैं कि– "तुलसी की कविता अपने देश और काल के यथार्थ पर उगी हुई कविता है। तुलसी भक्त थे। वे भक्ति के सामने कविता को कोई खास महत्त्व भी नहीं देते थे। लेकिन उनकी भक्ति और उस भक्ति को वहन करने वाले उनके व्यक्तित्त्व में वे तत्त्व मौजूद थे जिनके कारण वे महान् कवि बन गए।"

संदर्भ ग्रन्थ

1. रामचरितमानस, श्री गोस्वामी तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर, सं. 2066
2. कवितावली, श्री गोस्वामी तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर, प्र. वर्ष 1980
3. विनय पत्रिका, महाकवि गोस्वामी तुलसीदास, ज्ञानमण्डल प्रकाशन, वाराणसी, द्वि सं.– सं. 2019
4. वैराग्य–संदीपनी, श्री गोस्वामी तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर, तृतीय सं.– सं. 2051
5. पार्वती मंगल, श्री गोस्वामी तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर, सं. 2061
6. श्रीजानकी मंगल, श्री गोस्वामी तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर
7. बरवै रामायण, श्री गोस्वामी तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर, तृतीय संस्करण सं. 2051
8. The Modern Vernacular Literature of Hidustan, George A. Griersons, the Asiatic Society, Calcutta, 1889.
9. शिवसिंह सरोज, शिवसिंह सेंगर, ज्ञान पुस्तक प्राइवेट लि., दिल्ली पुनः मुद्रण–2016
10. हिन्दी का आलोचनात्मक इतिहास, रामकुमार वर्मा, राम नारायण लाल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स, इलाहाबाद, 1954
11. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, प्रिया प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम सं. 2010
12. हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास, डॉ. रामदत्त भारद्वाज, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
13. गोस्वामी तुलसीदास, रामजी तिवारी, साहित्य अकादमी, प्रथम सं. 1998
14. लोकवादी तुलसीदास, विश्वनाथ त्रिपाठी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम सं. 1974
15. तुलसीदास एक पुनर्मूल्यांकन, सं. अजय तिवारी, आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणाद्ध, प्रथम सं. 2001
16. तुलसीदास, माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी परिषद् विश्वविद्यालय, प्रयाग सं. 1963
17. रामचरितमानस की भूमिका, रामदास गौड़, हिन्दी पुस्तक एजेंसी, बनारस
18. तुलसी संदर्भ, डॉ. नगेन्द्र, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम सं. 1998
19. तुलसी साहित्य और साधना, इन्द्रपाल सिंह 'इन्दु', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा 1974
20. रामचरितमानस श्रीगोस्वामी तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर, सं. 2066
21. कवितावली, श्रीगोस्वामी तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर, प्र. वर्ष. 1980